प्रा....स्ता....वि....क

इसके पूर्व यह पुस्तक की तेरह आवृत्ति प्रसिद्ध हो चुकी है। तेरहवी आवृत्ति की दस हजार नकल संपूर्ण हो जाने से यह चौदहवी आवृत्ति की २०००० नकल मुद्रित की जाती है।

प्रुफ संशोधन श्री जैन सूक्ष्मतत्त्वबोध पाठशाला के प्राध्यापक कपूरचंद रणछोडदास वारैयाने किया है।

शुद्धि पर पूर्ण लक्ष दिया है। यद्यपि शुद्धिपत्रक दिया है तथापि दृष्टिदोष और प्रेसदोष से अशुद्धिया रहने मे आयी हो तो उसके लीए क्षमा चाहते है।

महत्त्व की भूलो देखने मे आवे तो हमको ज्ञात करने की विज्ञप्ति है, जिसे नयी आवृत्ति मे सुधारा हो सके।

लि.

महा सुदि ५
सं. २०३३

वकील चीमनलाल अमृतलाल शाह
श्री बाबुलाल जेशिंगलाल महेता
ओनररी सेक्रेटरीओ
श्रीमद् यशोविजयजी जैन संस्कृत पाठशाला
अने श्री जैन श्रेयस्कर मंडल, महेसाणा.

*

:: प्राप्तिस्थानो ::

श्री जैन श्रेयस्कर मंडळ
महेसाणा (उ. गु.)

श्री जैन श्रेयस्कर मंडळ
पालिताणा (सौराष्ट्र)

अ...नु...क्र...म...णि...का

Note: The last six rows of this table, below this point, are too faint to read.

२. पंचिंदिय-गुरु-स्थापना सूत्र

पंचिंदिय-संवरणो,
तह नवविह-बंभचेर-गुत्ति-धरो ।
चउविह-कसाय-मुक्को,
इअ अट्ठारस-गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥
पंच-मह-व्वय-जुत्तो,
पंच-विहा-ऽऽयार-पालण-समत्थो ।
पंच-समिओ ति-गुत्तो,
छत्तीस-गुणो गुरू मज्झ ॥२॥

इस सूत्र में श्री आचार्यमहाराज के छत्रीश गुणों का वर्णन है। और कोइ भी क्रिया करते समय जब स्थापनाचार्य की स्थापना की जाती है, उस समय यह सूत्र बोला जाता है।

३. खमासमण (पञ्चाङ्ग प्रणिपात) सूत्र

इच्छामि खमा-समणो ! वंदिउं
जावणिज्जाए निसीहिआए ?
मत्थएण वंदामि ।

यह सूत्र जिनेश्वर प्रभु और गुरुजी को वंदन करते समय बोला जाता है।

४. सुगुरु को सुख-साता-पृच्छा.

इच्छकार सुह राइ? सुह देवसि?
सुख तप? शरीर-निराबाध?
सुख-संजम-जात्रा निर्वहो छो जी?
स्वामि! साता छे जी?
भात-पाणीनो लाभ देजो जी॥

इस सूत्र में गुरु महाराज को सब प्रकार से भक्तिपूर्वक सुखसाता पूछी जाती है। और संजम, तप आदि में आती हुइ तकलीफो को दूर करने की ओर ध्यान देकर सारसंभाल रखने की ओर शिष्य का लक्ष्य खेंचने में आता है।

५. इरियावहिया-प्रतिक्रमण-सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!
इरियावहियं पडिक्कमामि?
इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं ॥१॥
इरियावहियाए विराहणाए ॥२॥
गमणा-ऽऽगमणे ॥३॥

पाण-क्कमणे बीय-क्कमणे हरियक्कमणे
ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-
मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे ॥४॥
जे मे जीवा विराहिया ॥५॥
एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया
पंचिंदिया ॥६॥
अभिहया वत्तिया लेसिया
संघाइया संघट्टिया परियाविया
किलामिया उद्दविया
ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ
ववरोविया,
तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥७॥

इस सूत्र में चलते फिरते, जाते, आते, भी अपने से जीवहिंसा आदि हो जाने से जो पाप लगा हो, वह दूर करने की हकीकत है।

६. तस्स उत्तरी-करणेणं सूत्र.

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेणं।

पावाणं कम्माणं निग्गायण-ट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥१॥

इरियावहियं सूत्र से दूर करने से भी बचे हुए पापो का नाश करने के लिए काउस्सग्ग करने का पांच हेतु इस सूत्र में आये है।

७. अन्नत्थ ऊससिएणं सूत्र

अन्नत्थ-ऊससिएणं,
नीससिएणं, खासिएणं,
छीएणं, जंभाइएणं,
उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए ॥१॥
सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं,
सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं,
सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं ॥२॥
एवमाइएहिं आगारेहिं,
अ-भग्गो अ-विराहिओ,
हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥

जाव अरिहंताणं भगवंताणं,
नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं,
झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

इस सूत्र में काउस्सग्ग करते समय स्वाभाविक ही हो जाने वाली कितनी ही शारीरिक छोटी बडी क्रियाओं से काउस्सग्ग का भंग न हो जाय। इस लिए सोल आगार-छूट लेने का वर्णन है। साथ में ही काउस्सग्ग करने की रीति, दृढता, और पूर्ण करने की मर्यादा दिखलाई गई है।

८. लोगस्स–नामस्तव–सूत्र

लोगस्स उज्जोअ–गरे,
धम्म–तित्थ–यरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं,
चउ–वीसं पि केवली ॥१॥
उसभमजिअं च वंदे,
संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउम–प्पहं सु–पासं.
जिणं च चंद–प्पहं वंदे ॥२॥

सु-विहिं च पुप्फ-दंतं,
सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं,
धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥
कुंथुं अरं च मल्लिं,
वंदे मुणि-सुव्वयं नमि-जिणं च ।
वंदामि रिट्ठ-नेमिं,
पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥

एवं मए अभिथुआ,
विहुय-रय-मला पहीण जर-मरणा ।
चउ-वीसं पि जिणवरा,
तित्थ-यरा मे पसीयंतु ॥५॥
कित्तिय-वंदिय-महिया,
जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग-बोहि-लाभं,
समाहि-वरमुत्तमं दितु ॥६॥

दश मनना, दश वचनना, बार कायाना ए बत्रीश दोषमां जे कोइ दोष लाग्यो होय ते सवि हु मन-वचन -कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं।

इस सूत्र में सामायिक व्रत की महिमा समझाने में आई है, और सामायिक करनेवाला जितनी भी वार सामायिक करे, उतनी देर तक श्रावक होते हुवे भी श्रावक· मुनि तुल्य गिना जा सकता है। इस लिए "परम चारित्र धर्म की आराधना के लीए वार वार सामायिक करना चाहिये" इस भावना को टिका रखने के लिये सामायिक पारते समय यह सूत्र बोला जाता है।

११. जग-चिन्तामणि चैत्यवन्दन

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!

चैत्यवंदन करुं? इच्छं.

जग-चिन्तामणि! जगनाह!

जग-गुरु! जग-रक्खण!

जग-बन्धव! जग-सत्थ-वाह!

जग-भाव-विअक्खण!

अट्ठा-वय-संठविअ-रूव!

कम्मऽट्ठ-विणासण!

चउवीसंपि जिण-वर !

जयंतु अ-प्पडिहय-सासण ! ॥१॥

कम्म-भूमिहिं कम्म-भूमिहिं पढम-संघयणि

उक्कोसय सत्तरि-सय

जिण-वराण विहरंत लब्भइ,

नव-कोडिहिं केवलीण,

कोडि-सहस्स नव साहु गम्मइ ।

संपइ जिण-वर वीस मुणि,

बिहुं कोडिहिं वर-नाण;

समणह कोडि-सहस्स-दुअ,

थुणिज्जइ निच्च विहाणि ॥२॥

जयउ सामिय, जयउ सामिय, रिसह सत्तुंजि

उज्जिंति पहु-नेमि-जिण,

जयउ वीर सच्च-उरी-मंडण,

भरु-अच्छहिं मुणि-सुव्वय,

मुहरि-पास दुह-दुरिअ-खंडण ।

अवर-विदेहिं तित्थयरा,

चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि ।
तीआ-ऽणा-ऽगय संपइ अ,
वंदुं जिण सव्वे वि ॥३॥

सत्ता-णवइ सहस्सा,
लक्खा छप्पन्न अट्ठ-कोडीओ ।
बत्तीस-सय बासियाइं,
तिअ-लोए चेइए वंदे ॥४॥

पनरस-कोडि-सयाइं,
कोडी बायाल लक्ख अडवन्ना ।
छत्तीस-सहस-असिइं,
सासय-बिंबाइं पणमामि ॥५॥

यह सूत्र (वृद्धप्रवाद से प्रथम की दो गाथाये) श्री गौतमस्वामीने चैत्यवंदन के तौर से रचा है। उसमें अष्टापद पर्वत पर विराजित चौवीश तीर्थंकरों को, वीश विहरमान तीर्थंकरों को, प्रसिद्ध तीर्थों को, सर्वचैत्यों को, प्रतिमाओं को और मुनि आदि को वन्दन करने में आया है।

१२. जं किंचि नाम-तित्थ सूत्र.

जंकिंचि नाम-तित्थं.
सग्गे पायालि माणुसे लोए ।

जाइं जिणबिंबाइं
 ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥

इस सूत्र में जो कोई भी नाम मात्र प्रसिद्ध जैन तीर्थ हो, उसको तथा तीन लोक में रही हुई सब जिन-प्रतिमाओ कों नमस्कार करने में आया है।

१३, नमुत्थु णं (शक्रस्तव) सूत्र.

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं ॥१॥
आइगराणं. तित्थ-यराणं. सयं-संबुद्धाणं ॥२॥.
पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-
पुंडरीआणं. पुरिस-वर-गंध-हत्थीणं ॥३॥
लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग-हिआणं,
लोग-पईवाणं, लोग-पज्जोअ-गराणं ॥४॥
अ-भय-दयाणं, चक्खु-दयाणं,
मग्ग-दयाणं. सरण-दयाणं, बोहि-दयाणं ॥५॥
धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं,
धम्म-नायगाणं. धम्मसारहीणं,
धम्म-वर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ॥६॥

अ–प्पडिहय–वर–नाण,–
दंसण–धराणं, वियट्ट–छउमाणं ॥७॥
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,
बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥८॥
सव्व–न्नूणं सव्व–दरिसीणं,
सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहम–
पुणराविति "सिद्धिगई" नामधेयं ठाणं
संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ–भयाणं ॥९॥
जे अ अईया सिद्धा,
जे अ भविस्संति णागए काले।
संपइ अ वट्टमाणा,
सव्वे ति–विहेण वंदामि ॥१०॥

शक्र–इन्द्र महाराज भगवान की स्तुति यह सूत्र बोल कर करते हैं। इस में अरिहंत भगवान के असाधारण सर्व श्रेष्ठ गुणों का वर्णन है।

१४. जावंति चेइआइं सूत्र.

जावंति चेइआइं,
उड्ढे अ अहे अ तिरिअ–लोए अ।

सव्वाइं ताइं वंदे,
इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

इस सूत्र में तीन लोग में रही हुई श्री जिनप्रतिमाओं को नमस्कार किया गया है।

१५. जावंत के वि साहू-सूत्र

जावंत केवि साहू,
भरहेरवय-महाविदेहे अ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ,
ति-विहेण तिदंड-विरयाणं ॥१॥

इस सूत्र में भरत, ऐरावत और महाविदेह क्षेत्र में रहे हुवे सर्व साधु-साध्वी महाराजाओं को नमस्कार करने में आया है।

१६. संक्षिप्त पंचपरमेष्ठि नमस्कार.

नमोऽर्हत-सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

श्री सिद्धसेन दिवाकरसूरि के रचे हुवे इस सूत्र में श्री पंचपरमेष्ठि को नमस्कार करने में आया है।

१७. उपसर्ग-हर-स्तोत्र.

उवसग्ग-हरं-पासं,
पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं।

विस–हर–विस–निन्नासं,
मंगल–कल्लाण–आवासं ॥१॥
विस–हर–फुलिंग–मंतं,
कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गह–रोग–मारी–
दुट्ठ–जरा जंति उवसामं ॥२॥
चिट्ठउ दूरे मंतो,
तुज्झ पणामो वि बहु–फलो होइ ।
नर–तिरिएसु वि जीवा,
पावंति न दुक्ख–दोगच्चं ॥३॥
तुह सम्मत्ते लद्धे,
चिंता–मणि–कप्प–पायव–ऽब्भहिए ।
पावंति अ–विग्घेणं
जीवा अ–यराऽमरं ठाणं ॥४॥
इअ संथुओ महा–यस !,
भत्ति–ब्भर–निब्भरेण हिअएण ।
ता देव ! दिज्ज बोहिं,
भवे भवे पास ! जिण–चंद ! ॥५॥

श्री पार्श्वनाथ प्रभु के गुणोंरूप यह सूत्र श्री भद्रबाहु स्वामी का रचा हुआ है। यह सब विघ्नों का नाश करनेवाला है।

१८. जयवीराय ! (महाप्रार्थना) सूत्र.

जय वीयराय ! जय गुरू !
होउ ममं तुह प्पभावओ भयवं ! ।
भव-निव्वेओ मग्गा-
ऽणुसारिआ, इट्ठ-फल-सिद्धी ॥१॥
लोग-विरुद्ध-च्चाओ,
गुरु-जण-पूआ, परत्थ-करणं च ।
सुह-गुरु-जोगो तव्वयण-
सेवणा, आ-भवमखंडा ॥२॥
वारिज्जइ जइ वि नियाण-
बंधणं वीय-राय ! तुह समये ।
तह वि मम हुज्ज सेवा,
भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥
दुक्ख-क्खओ कम्म-क्खओ,
समाहि-मरणं च, बोहि-लाभो अ ।

संपज्जउ मह एअं,
तुह नाह ! पणाम-करणेणं ॥४॥
सर्व-मङ्गल-माङ्गल्यं,
सर्व-कल्याण-कारणम् ।
प्रधानं सर्व-धर्माणां,
जैनं जयति शासनम् ॥५॥

इस सूत्र में प्रभु से मन, वचन, काया की एकाग्रता पूर्वक कितनीएक निर्दोष उत्तम प्रार्थनाएं करने में आइ है।

१९. अरिहंत-चेइआणं (चैत्यस्तव) सूत्र

अरिहंत-चेइआणं, करेमि काउस्सग्गं ॥१॥
वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए,
सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए,
बोहि-लाभ-वत्तिआए, निरुवसग्ग-वत्तिआए ॥२॥
सद्धाए, मेहाए, धिईए,
धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए
ठामि काउस्सग्गं ॥३॥ अन्नत्थ०

इस सूत्र में श्री जिनप्रतिमाओं के आराधना काउस्सग्ग करने के निमित्त, और उस समय रखने की भावनाओं का वर्णन है।

२०. कल्लाण-कंदं-स्तुति

(उपजाति छन्द)

कल्लाण-कंदं पढमं जिणिंदं,
संतिं तओ नेमि-जिणं मुणिंदं।
पासं पयासं सु-गुणिक्क-ठाणं,
भत्तीइ वंदे सिरि-वद्धमाणं ॥१॥

अ-पार-संसार-समुद्द-पारं,
पत्ता सिवं दिंतु सु-इक्क-सारं।
सव्वे जिणिंदा सुर-विंद-वंदा,
कल्लाण-वल्लीण विसाल-कंदा ॥२॥

निव्वाण-मग्गे वर-जाण-कप्पं,
पणासिया-ऽसेस-कुवाइ-दप्पं।
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं,
नमामि निच्चं ति-जग-प्पहाणं ॥३॥

कुंदिंदु-गो-क्खीर-तुसार-वन्ना,
सरोज-हत्था कमले निसण्णा।

वाएसिरी पुत्थय-वग्ग-हत्था,
सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥४॥

इस स्तुति की पहली गाथा में श्री ऋषभदेव, शान्ति-नाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीरस्वामी की, दूसरी में सर्व जिनवरोंकी, तीसरी में ज्ञान की और चौथी में श्रुतदेवी की स्तुति है।

२१. संसार-दावा-ऽनल-स्तुति.

(इन्द्रवज्रा छन्दः)

संसार-दावा-ऽनल-दाह-नीरं,
संमोह-धूली-हरणे समीरम्।
माया-रसा-दारण-सार-सीरं,
नमामि वीरं गिरि-सार-धीरम् ॥१॥

(वसन्ततिलका छन्दः)

भावा-ऽवनाम-सुर-दानव-मानवेन,-
चूला-विलोल-कमला-ऽऽवलि-मालितानि।
संपूरिता-ऽभिनत-लोक-समीहितानि,
कामं नमामि जिन-राज-पदानि तानि ॥२॥

(मन्दाक्रान्ता छन्दः)

बोधाऽगाधं सु-पद-पदवी-नीर-पूरा-ऽभिरामं,
जीवा-ऽहिंसा-विरल-लहरी-संगमा-ऽगाह-देहं।

चूलावेलं गुरु-गम-मणि-संकुलं दूर-पारं,
सारं वीरागम-जलनिधिं साऽऽदरं साधु सेवे ॥३॥

(स्रग्धरा छन्दः)

आ-मूला-ऽऽलोल-धूली-बहुल-परिमला-
ऽऽलीढ-लोलाऽ-लिमाला-
झंकाराऽऽरावसारामलदलकमला-
ऽगारभूमिनिवासे ! ।
छायासंभारसारे ! वरकमलकरे !
तारहाराऽभिरामे !
वाणीसंदोहदेहे ! भवविरहवरं
देहि मे देवि ! सारम् ॥४॥

श्री हरिभद्रसूरि की रची हुई इस सम-संस्कृत स्तुति में (१) श्री महावीरस्वामी की (२) सर्व जिनेश्वरों की (३) श्री जिनागम की और (४) श्रुतदेवी की स्तुति है।

२२ पुक्खर-वर-दीव-ऽड्ढे (श्रुतस्तव) सूत्र.

(आर्या छन्दः)

पुक्खर-वर-दीव-ऽड्ढे,
धायई-संडे अ जंबू-दीवे अ ।

भरहेरवय-विदेहे,
    धम्मा-ऽऽइ-गरे नमंसामि ॥१॥
तम-तिमिर-पडल-विद्धं-
    सणस्स सुर-गण-नरिंद-महिअस्स।
सीमाधरस्स वंदे,
    पप्फोडिअ-मोह-जालस्स ॥२॥

(वसन्त-तिलका-छन्दः)

जाइ-जरा-मरण-सोग-पणासणस्स,
कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहा-ऽऽवहस्स।
को देव-दाणव-नरिंद-गण-ऽच्चिअस्स?,
धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं? ॥३॥
सिद्धे भो! पयओ णमो जिण-मए
    नंदी सया संजमे,
देवं नागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावऽच्चिए।
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं,
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ
    धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदण-वत्तियाए० ॥

इस सूत्रमें ढाई द्वीप में विचरनेवाले और एक सरिखे श्रुतज्ञान को उत्पन्न करनेवाले तीन काल के तीर्थंकर भगवानों को नमस्कार करके श्रुतज्ञान की महत्त्व की स्तुति करने में आई है।

२३ सिद्धाणं बुद्धाणं (सिद्धस्तव) सूत्र

सिद्धाणं बुद्धाणं, पार-गयाणं परंपर-गयाणं।
लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति।
तं देव-देव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥
इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स।
संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥
उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खानाणंनिसीहिआजस्स।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥
चत्तारि अट्ठ दसदोय, वंदिया जिणवराचउव्वीसं।
परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

इस सूत्र में सर्व सिद्धों की, श्रीमहावीरस्वामी की श्री नेमिनाथ प्रभुकी, तथा अष्टापद पर्वत आदि पर विराजमान चौवीसादि तीर्थंकरोंकी स्तुति की है।

२४. वेयावच्च–गराणं सूत्र.

वेयावच्चगराणं संतिगराणं
सम्मद्दिट्ठि–समाहिगराणं
करेमि काउस्सग्गं ॥ अनत्थ०—

इस सूत्र में संघ में शांति फैलाने के लिए सम्यक्त्ववंत देवों का सम्यग्दर्शन गुण की शुद्धि की दृष्टि से स्मरण करने में आया है।

२५. भगवानादि–वन्दन–सूत्र.

भगवानहं आचार्यहं उपाध्यायहं सर्वसाधुहं.

२६. देवसिअ–पडिक्कमणे ठाउं ? सूत्र.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ?
इच्छं. सव्वस्स वि देवसिअ.
दुच्चिंतिअ. दुब्भासिअ.
दुच्चिट्ठिअ. मिच्छा मि दुक्कडं ॥

२७. इच्छामि ठामि सूत्र.

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं,
जो मे देवसिओ अइयारो कओ;
काइओ, वाइओ, माणसिओ,
उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अ-कप्पो,
अ-करणिज्जो. दुज्झाओ,
दु-व्विचिंतिओ, अणायारो,
अणिच्छिअव्वो, अ-सावग-पाउग्गो,
नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते,
सुए. सामाइए. तिण्हं गुत्तीणं,
चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणु-व्वयाणं,
तिण्हं गुण-व्वयाणं, चउण्हं सिक्खा-वयाणं,
बारसविहस्स सावगधम्मस्स.
जं खंडिअं जं विराहिअं
तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इस सूत्र मे अलग अलग आचारो को आचरते हुए जो अतिचार लगा हो, उसका संक्षेप से प्रतिक्रमण दिखाने में आया है।

२८. पञ्च-आचार की गाथाएं.

नाणंमि दंसणंमि अ,
चरणंमि तवंमि तह य वीरियंमि ।
आयरणं आयारो,
इअ एसो पंचहा भणिओ
काले विणए बहु-माणे,
उवहाणे तह अ-निण्हवणे ।
वंजण-अत्थ-तदुभए.
अट्ठ-विहो नाणमायारो
निस्संकिअ निक्कंखिअ.
निव्वितिगिच्छा अ-मूढ-दिट्ठी ः
उववूह-थिरीकरणे,
वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ
पणिहाण-जोग-जुत्तो.
पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं ।
एस चरित्ता-ऽऽयारो.
अट्ठ-विहो होइ नायव्वो

वारस–विहंमि वि तवे,
स–ऽब्भितर–वाहिरे कुसल-दिट्ठे ।
अ–गिलाई अणा –ऽऽजीवी,
नायव्वो सो तवा–ऽऽयारो ॥५॥

अण–ऽसणमूणोअरिया,
वित्ति–संखेवणं रसच्चाओ ।
काय–किलेसो संली–
णया य वज्झो तवो होइ ॥६॥

पायच्छित्तं विणओ,
वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
झाणं उस्सग्गो वि अ,
अब्भितरओ तवो होइ ॥७॥

अ–णिग्गहिअ–बलवीरियो,
परक्कमई जो जहुत्तमाउत्तो ।
जुंजइ अ जहा–थामं,
नायव्वो वीरिया–ऽऽयारो ॥८॥

इस आठ गाथाओं में ज्ञानादि पांच महान् आचारों का भेदों का वर्णन है ।

२९. सुगुरु-वन्दन सूत्र

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं
जावणिज्जाए, निसीहिआए ?
अणुजाणह मे मिउग्गहं. निसीहि,
अहो कायं कायसंफासं ।
खमणिज्जो भे ! किलामो,
अप्पकिलंताणं वहु-सुभेण भे !
दिवसो वइक्कंतो ?
जत्ता भे ! ? जवणिज्जं च भे ! ?
खामेमि खमा-समणो ! देवसिअं
वइक्कमं आवस्सिआए,
पडिक्कमामि खमासमणाणं,
देवसिआए आसायणाए
तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए,
मण-दुक्कडाए, वय-दुक्कडाए, काय-दुक्कडाए,
कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए,
सव्व-कालिआए, सव्व-मिच्छोवयाराए,

सव्व-धम्मा-ऽइक्कमणाए आसायणाए
जो मे अइयारो कओ
तस्स खमासमणो !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ॥

दुसरी वार वन्दन करते समय "आवस्सिआए" यह पद न कहना चाहिये। और राईको "राई वइक्कंता" पक्खी को "पक्खो वइक्कंतो," चउ-मासी को "चउ-मासी वइकंता," और संवच्छरी को "संवच्छरो वइक्कंतो," इस तरह से पाठ बोलना चाहिये।

इस से सद्गुरु को वंदन करके उनकी सेवा-वैयावृत्य में उनकी प्रत्ये लगे हुए दोषों को क्षमा याचने में आती है।

३०. देवसिअं आलोउं ? सूत्र.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
देवसिअं आलोउं ? इच्छं,
आलोएमि. जो मे देवसिओ०

३१. सात लाख.

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय,-

सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौद लाख साधारण वनस्पतिकाय,
वे लाख वेइंद्रिय, वे लाख तेइंद्रिय,
वे लाख चउरिंद्रिय, चार लाख देवता,
चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय,
चौद लाख मनुष्य, एवंकारे—
चोराशी लाख जीवयोनिमांहि मारे जीवे जे कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय ते सर्वे मने, वचने, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इस सूत्र में चोराशी लाख योनि से उत्पन्न होते हुवे जीवो में से जो जीव हणाया हो उसके लिये मिच्छा मि दुक्कडं देने में आता है ॥

३२. अढार पापस्थानक.

पहेले प्राणा—ऽतिपात.
बीजे मृषावाद, त्रीजे अ-दत्ताऽऽदान,
चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह,

छट्ठे क्रोध, सातमे मान.

आठमे माया. नवमे लोभ.

दसमे राग. अग्यारमे द्वेष.

बारमे कलह. तेरमे अभ्याख्यान.

चौदमे पैशुन्य. पन्नरमे रति-अरति.

सोलमे पर-परिवाद.

सत्तरमे माया-मृषावाद.

अढारमे मिथ्यात्व-शल्य.

ए अढार पापस्थानकमांहि मारे जीवे जे कोई पाप सेव्युं होय. सेवराव्युं होय. सेवतां प्रत्ये अनुमोद्युं होय. ते सवे मने. वचने. कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इस में अढार प्रकार से पाप बांधा जाता है. उनके नाम और उन प्रकार से किए हुए पापों की क्षमा मांगने में आती है (मिथ्यादुष्कृत देने से आता है)।

३६. सव्वस्स-वि प्रतिक्रमण-सूत्र

सव्वस्स वि देवसिअ दुच्चिंतिअ.

दुब्भासिअ. दुच्चिट्ठिअ.

अत्त-ऽट्ठा य परऽट्ठा,
उभय-ऽट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥

पंचण्हमणु-व्वयाणं,
गुण-व्वयाणं च तिण्हमइयारे।
सिक्खाणं च चउण्हं,
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥८॥

पढमे अणु-व्वयम्मि,
थूलग-पाणा-इवाय-विरईओ।
आयरिअम-प्पसत्थे,
इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥९॥

वह-बंध-छवि-च्छेए,
अइ-भारे भत्त-पाण-वुच्छेए।
पढम-वयस्स-ऽइयारे,
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१०॥

बीए अणु-व्वयम्मि,
परिथूलग-अलिअ-वयण-विरईओ।
आयरिअम-प्पसत्थे,
इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥११॥

सहसा रहस्स दारे,
मोसुवएसे अ कूड-लेहे अ ।
बीय-वयस्स-ऽइआरे,
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१२॥
तइए अणु-व्वयम्मि,
थूलग-परदव्व-हरण-विरईओ ।
आयरिअम-प्पसत्थे,
इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥१२॥
तेना-ऽऽहड-प्पओगे,
तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ ।
कूड-तुल कूड-माणे
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१४॥
चउत्थे अणु-व्वयंमि,
निच्चं परदार-गमण-विरईओ ।
आयरिअम-प्पसत्थे,
इत्थ पमाय-प्पसंगेणं, ॥१५॥
अपरिग्गहिआ-इत्तर,
अणंग-विवाह-तिव्व-अणुरागे ।

चउत्थ–वयस्स–ऽइआरे.
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१६॥

इत्तो अणु–व्वए पंचमंमि,
आयरिअमप्पसत्थम्मि ।
परिमाण–परिच्छेए,
इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ॥१७॥

धण–धन्न–खित्त–वत्थू,
रुप्प–सुवन्ने अ कुविअ–परिमाणे ।
दुपए चउप्पयंमि य,
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१८॥

गमणस्स उ परिमाणे.
दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च ।
वुड्ढी सइ–अंतरद्धा,
पढमम्मि गुण–व्वए निंदे ॥१९॥

मज्जम्मि अ मंसम्मि अ,
पुप्फे अ फले अ गंध-मल्ले अ ।
उवभोग–परिभोगे.
बीयम्मि गुण–व्वए निंदे ॥२०॥

सचित्त पडिबद्धे.
अपोलि-दुप्पोलिअं च आहारे।
तुच्छोसहि-भक्खणया,
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२१॥

इंगाली-वण-साडी-
भाडी-फोडीसु वज्जए कम्मं।
वाणिज्जं चेव दंत-
लक्ख-रस-केस-विस-विसयं ॥२२॥

एवं खु जंत-पिल्लण-
कम्मं निल्लंछणं च दव-दाणं।
सर-दह-तलाय-सोसं,
असई-पोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥

सत्थग्गि-मुसल-जंतग-
तण-कट्ठे मंत-मूल-भेसज्जे।
दिन्ने दवाविए वा,
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२४॥

न्हाणु-व्वट्टण-वन्नग-
विलेवणे सद्द-रूव-रस-गंधे।

वत्था–ऽऽसण–आभरणे,
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२५॥
कंदप्पे कुक्कुइए,
मोहरि–अहिगरण–भोग–अइरित्ते।
दंडम्मि अणट्ठाए,
तइअम्मि–गुण–व्वए निंदे ॥२६॥
तिविहे दु–प्पणिहाणे,
अण–ऽवट्ठाणे तहा सइ–विहूणे।
सामाइअ–वितह–कए,
पढमे सिक्खा–वए निंदे ॥२७॥
आणवणे पेसवणे,
सद्दे रूवे अ पुग्गल–क्खेवे।
देसा–ऽवगासिअम्मि,
बीए सिक्खा–वए निंदे ॥२८॥
संथारुच्चार–विहि–
पमाय तह चेव भोयणाभोए।
पोसह–विहि–विवरीए,
तइए सिक्खा–वए निंदे ॥२९॥

सच्चित्ते निक्खिवणे,
पिहिणे ववएस-मच्छरे चेव ।
काला-इक्कम-दाणे.
चउत्थे सिक्खा-वए निंदे ॥३०॥

सुहिएसु अ दुहिएसु अ.
जा मे अस्संजएसु अणुकंपा ।
रागेण व दोसेण व.
तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥

साहूसु संविभागो.
न कओ तव-चरण-करण-जुत्तेसु ।
संते फासुअ-दाणे.
तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥

इह-लोए पर-लोए.
जीविअ-मरणे अ आसंस-पओगे ।
पंच-विहो अइआरो.
मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥३३॥

काएण काइअस्स.
पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।

मणसा माणसिअस्स,
सव्वस्स वया–ऽइयारस्स ॥३४॥
वंदण-वय-सिक्खा-गा-
रवेसु सन्ना-कसाय-दंडेसु ।
गुत्तीसु अ समिईसु अ,
जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥
सम्म–दिट्ठी जीवो,
जइ वि हु पावं समायरइ किंचि ।
अप्पो सि होइ बंधो,
जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥
तं पि हु सपडिक्कमणं,
स-प्परिआवं स-उत्तर-गुणं च ।
खिप्पं उवसामेइ,
वाहि व्व सु–सिक्खिओ विज्जो ॥३७॥
जहा विसं कुट्ठ-गयं,
मंत-मूल–विसारया ।
विज्जा हणंति मंतेहिं.
तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥

एवं अट्ठ-विहं कम्मं,
राग-दोस-समज्जिअं ।
आलोअंतो अ निंदंतो,
खिप्पं हणइ सु-सावओ ॥३९॥

कय-पावो वि मणुस्सो,
आलोइअ निंदिअ गुरु-सगासे ।
होइ अइरेग-लहुओ,
ओहरिअ-भरु व्व भार-वहो ॥४०॥

आवस्सएण एएण,
सावओ जइवि बहु-रओ होइ ।
दुक्खाणमंत-किरिअं,
काही अ-चिरेण कालेण ॥४१॥

आलोअणा बहु-विहा,
न य संभरिआ पडिक्कमण-काले ।
मूल-गुण-उत्तर-गुणे,
तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥

तस्स धम्मस्स केवलि-पन्नत्तस्स,
अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए,

विरओ मि विराहणाए ।
तिविहेण पडिक्कंतो,
वंदामि जिणे चउ-व्वीसं ॥४३॥
जावंति चेइआइं,
उड्ढे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे,
इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥
जावंत के वि साहू,
भरहेरवय-महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ,
तिविहेण तिदंड-विरयाणं ॥४५॥
चिर-संचिय-पाव-पणासणीइ,
भव-सय-सहस्स-महणीए ।
चउ-व्वीस-जिण-विणिग्गय-
कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥
मम मंगलमरिहंता,
सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।

सम्म-दिट्ठी देवा,
दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥

पडिसिद्धाणं करणे,
किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं ।
असद्दहणे अ तहा,
विवरीअ-परूवणाए अ ॥४८॥

खामेमि सव्व-जीवे,
सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्व-भूएसु,
वेरं मज्झ न केणइ ॥४९॥

एवमहं आलोइअ,
निंदिअ-गरहिअ-दुगंछिअं सम्मं ।
ति-विहेण पडिक्कंतो,
वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

[illegible]

३९. क्षेत्रदेवता की स्तुतिः

खित्त-देवयाए करेमि काउस्सग्गं-अन्नत्थ०
जीसे खित्ते साहू,
दंसण-नाणेहिं चरण-सहिएहिं
साहंति मुक्ख-मग्गं,
सा देवी हरउ दुरिआइं ॥१॥

यह क्षेत्रदेवता की स्तुति है। वह पुरुष ही बोले। स्त्रीयां "यस्याः क्षेत्रं" बोले।

४०. कमल-दल-स्तुतिः

कमल-दल-विपुल-नयना,
कमल-मुखी कमल-गर्भ-सम-गौरी।
कमले स्थिता भगवती,
ददातु श्रुत-देवता सिद्धिम् ॥१॥

यह श्रुतदेवता की स्तुति है। वह स्त्रीयां ही बोले।

४१. भुवनदेवता की स्तुतिः

भुवण-देवयाए करेमि काउस्सग्गं-अन्नत्थ०
ज्ञानाऽऽदि-गुण-युतानां,
नित्यं स्वाध्याय-संयम-रतानाम्।

विदधातु भुवनदेवी,
शिवं सदा सर्व-साधूनाम् ॥१॥

४२. क्षेत्र-देवता की स्तुतिः

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य,
साधुभिः साध्यते क्रिया।
सा क्षेत्र-देवता नित्यं,
भूयान्नः सुख-दायिनी ॥१॥

यह दोनों अनुक्रम से भुवनदेवता तथा क्षेत्रदेवता की स्तुतियां हैं। यह दोनों-स्तुतियां पाक्षिक प्रतिक्रमण में बोली जाती हैं।

४३. नमोऽस्तु वर्द्धमानाय-(सायं-श्रीवीरप्रभुकी) स्तुतिः*

इच्छामो अणुसट्ठिं,
नमो खमा-समणाणं। नमोऽर्हत्॰॥
नमोऽस्तु वर्द्धमानाय,
स्पर्द्धमानाय कर्मणा।
तज्जया-वाप्त-मोक्षाय,
परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥१॥

---

* [illegible]

येषां विकचा-ऽरविन्द-राज्या,
ज्यायः क्रम-कमला-ऽऽवलिं दधत्या ।
सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं,
कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥२॥
कषाय-तापा-ऽर्दित-जन्तु-निर्वृतिं,
करोति यो जैन-मुखा-ऽम्बुदोद्गतः
स शुक्र-मासोद्भव-वृष्टि-सन्निभो,
ददातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥

यह मुख्य तौर से श्री वीर परमात्माकी, सर्व तीर्थंकरों की, तथा जिनवाणी की स्तुति है। वह सामको देवसिअ प्रतिक्रमण में षडावश्यक पूर्ण होनेका आनन्द प्रकट करने के लिये बोली जाती है।

४७. विशाल-लोचन-(प्राभातिक-श्रीवीरप्रभुनी) स्तुतिः×

विशाल-लोचन-दलं,
प्रोद्यद्दन्तांशु-केसरम् ।
प्रातर्वीर-जिनेन्द्रस्य,
मुख-पद्मं पुनातु वः ।

× पूर्वान्तर्गत होने से स्त्रीया न बोले.

अक्खुया-ऽऽयार-चरित्ता,
ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥१॥

इस सूत्र से ढाई द्वीप में रहे हुए सब मुनियों को नमस्कार करने में आता है।

४९. वरकनक (सप्ततिशत-जिन) स्तुतिः

वर-कनक-शङ्ख-विद्रुम-
मरकत-घन-सन्निभं विगतमोहम्।
सप्तति-शतं जिनानां,
सर्वामर-पूजितं वन्दे ॥१॥

इस से एकसो सित्तेर तीर्थंकरों को वन्दन करने में आता है। यह पुरुषों को बोलना चाहिये।

५०. लघु-शान्ति-स्तवः

शान्तिं शान्ति-निशान्तं,
शान्तं शान्ता-ऽ-शिवं नमस्कृत्य।
स्तोतुः शान्ति-निमित्तं,
मन्त्र-पदैः शान्तये स्तौमि ॥१॥
ओमिति निश्चित-वचसे,
नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्।

शान्ति-जिनाय जयवते
यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥२॥

स-कला-ऽतिशेषक-महा-
संपत्ति-समन्विताय शस्याय।
त्रैलोक्य-पूजिताय च
नमो नमः शान्ति-देवाय ॥३॥

सर्वा-ऽमर-सु-समूह-
स्वामिक-संपूजिताय न जिताय।
भुवन-जन-पालनोद्यत-
तमाय सततं नमस्तस्मै ॥४॥

सर्व-दुरितौघ-नाशन-
कराय सर्वा-ऽशिव-प्रशमनाय।
दुष्ट-ग्रह-भूत-पिशाच-
शाकिनीनां प्रमथनाय ॥५॥

यस्येति नाम-मन्त्र-
प्रधान-वाक्योपयोग-कृत-तोषा।
विजया कुरुते जन-हित-
मिति च नुता नमत तं शान्तिम् ॥६॥

भवतु नमस्ते भगवति !
विजये ! सुजये ! परापरैरजिते !
अपराजिते ! जगत्यां,
जयतीति जया-वहे ! भवति ॥७॥
सर्वस्याऽपि च सङ्घस्य,
भद्र–कल्याण–मङ्गल–प्रददे ! ।
साधूनां च सदा शिव–
सु-तुष्टि-पुष्टि-प्रदे ! जीयाः ॥८॥
भव्यानां कृत–सिद्धे !
निर्वृति–निर्वाण–जननि ! सत्त्वानाम् ।
अ–भय–प्रदान–निरते !
नमोऽस्तु स्वस्ति-प्रदे ! तुभ्यम् ॥९॥
भक्तानां जन्तूनां,
शुभा-ऽऽवहे ! नित्यमुद्यते देवि ! ।
सम्यग्दृष्टीनां धृति-
गति–मति–बुद्धि–प्रदानाय ॥१०॥
जिन-शासन-निरतानां,
शान्ति-नतानां च जगति जनतानाम् ।

श्री–संपत्कीर्ति–यशोवर्द्धनि !
जय देवि ! विजयस्व ॥११॥

सलिला–ऽनल-विष-विषधर-
दुष्ट-ग्रह-राजरोग-रण-भयतः ।
राक्षस-रिपु-गण-मारि-
चौरेति-श्वापदा-ऽऽदिभ्यः ॥१२॥

अथ रक्ष रक्ष सु-शिवं
कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदेति ।
तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं
कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वम् ॥१३॥

भगवति ! गुणवति ! शिव–शान्ति-
तुष्टि-पुष्टि-स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ।
ओमिति नमो नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः
यः क्षः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥१४॥

एवं यन्नामाक्षर-
पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी ।
कुरुते शान्तिं नमतां
नमो नमः शान्तये तस्मै ॥१५॥

इति पूर्व–सूरि–दर्शित–
मन्त्र-पद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः ।
सलिलादि–भय–विनाशी,
शान्त्या–ऽऽ–दिकरश्च भक्तिमताम् ॥१६॥
यश्चैनं पठति सदा,
शृणोति भावयति वा यथा–योगम् ।
स हि शान्ति-पदं यायात्,
सूरिः श्री–मानदेवश्च ॥१७॥
उपसर्गाः क्षयं यान्ति,
छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ।
मनः प्रसन्नतामेति,
पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१८॥
सर्व–मङ्गल–माङ्गल्यं,
सर्व–कल्याण–कारणम् ।
प्रधानं सर्व–धर्माणां,
जैनं जयति शासनम् ॥१९॥

मरकी का उपद्रव दबाने के लिये श्री नाडुल नगर में श्री मानदेवसूरिजीने यह स्तोत्र रचा है। उसको पढने से,

सुनने से तथा उस से मन्त्रित किए हुये जलको छिड़कने से सर्व रोग दूर हो जाते है और शान्ति फैल जाती है।

५१. चउक्कसाय (पार्श्वनाथ-चैत्यवन्दन)-सूत्र

चउक्कसाय-पडिमल्लुल्लूरणु,
दुज्जय-मयण-बाण-मुसुमूरणु।
सरस-पियंगु-वन्नु गय-गामिउ,
जयउ पासु भुवणत्तय-सामिउ ॥१॥
जसु तणु-कंति-कडप्प-सिणिद्धउ,
सोहइ फणि-मणि-किरणा-ऽऽलिद्धउ।
नं नव-जलहर-तडिल्लय-लंछिउ,
सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥२॥

भावार्थ—[illegible] पार्श्वनाथ के [illegible] चैत्य-वन्दन है।

५२. भरहेसर [illegible]

भरहेसर, बाहुबली,
अभयकुमारो अ ढंढणकुमारो।
सिरिओ, अणिआउत्तो,
अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥१॥

मेअज्ज, थूलभद्दो,
    वयररिसी, नंदिसेण, सीहगिरी ।
कयवन्नो अ, सुकोसल,
    पुंडरीओ, केसी, करकंडू ॥२॥
हल्ल, विहल्ल, सुदंसण,
    साल, महासाल, सालिभद्दो अ ।
भद्दो, दसन्नभद्दो,
    पसन्नचंदो अ जसभद्दो ॥३॥
    जंबु-पहू, वंक-चूलो,
    गय-सुकुमालो, अवंति-सुकुमालो ।
धन्नो, इलाइपुत्तो,
    चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥४॥
अज्जगिरी, अज्जरक्खिअ,
    अज्जसुहत्थी, उदायगो, मणगो ।
कालयसूरी, संबो,
    पज्जुन्नो, मूलदेवो अ ॥५॥
पभवो, विण्हुकुमारो,
    अद्दकुमारो, दढप्पहारी अ ।

सिज्जंस. कूरगड्डू अ.
सिज्जंभव. मेहकुमारो अ ॥६॥
एमाइ महासत्ता.
दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ।
जेसिं नामग्गहणे.
पावप्पबंधा विलयं जंति ॥७॥
सुलसा. चंदनबाला.
मणोरमा. मयणरेहा. दमयंती ।
नमयासुंदरी. सीया.
नंदा. भद्दा सुभद्दा य ॥८॥
राइमई. रिसिदत्ता.
पउमावई. अंजणा. सिरि–देवी ।
जिट्ठ. सुजिट्ठ. मिगावई.
पभावई. चिल्लणादेवी ॥९॥
बंभी. सुंदरी. रुप्पिणी.
रेवई. कुंती. सिवा. जयंती य ।
देवई. दोवई. धारणी.
कलावई. पुप्फचूला य ॥१०॥

पउमावई य, गोरी,
गंधारी लक्खमणा, सुसीमा य ।
जंबूवई सच्च-भामा,
रुप्पिणी, कण्ह-ऽट्ठ-महिसीओ ॥११
जक्खा य. जक्ख-दिन्ना.
भूआ, तह चेव भूअ-दिन्ना य ।
सेणा, वेणा, रेणा,
भइणीओ थूल-भद्दस्स ॥१२॥
इच्चा-ऽऽ-इ महा-सईओ,
जयंति अ-कलंक-सील-कलिआओ ।
अज्जवि वज्जइ जासिं,
जस-पडहो ति-हुअणे सयले ॥१३॥

भावार्थ—इस सज्झाय में प्रातःस्मरणीय ब्रह्मचारी, दानेश्वरी और तपस्वी वगैरह उत्तम पुरुषों और स्त्रीयों के नाम गिनाने में आये हैं ।

५३. मन्नह जिणाणं (श्रावक कृत्य की) सज्झाय.

मन्नह जिणाणमाणं.
मिच्छं परिहरह, धरह सम्मत्तं ।

भावार्थ—इस सज्झाय में श्रावक को करने योग्य छत्तीस कृत्यों का वर्णन है।

५४. पोसहनुं पच्चक्खाण.

करेमि भंते! पोसहं आहार-पोसहं देसओ सव्वओ, सरीर-सक्कार-पोसहं सव्वओ, बंभचेर-पोसहं सव्वओ, अ-व्वावार-पोसहं सव्वओ, चउ-व्विहं पोसहं ठामि, जाव-दिवसं [अहोरत्तं] पज्जुवासामि, दु-विहं, तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

भावार्थ—यह पोसह का पच्चक्खाण है। इस में पोसह के चार प्रकार बताये गये है। पोसह लेकर के निंदा विकथा में न पडते हुए धर्म को पुष्टि मिले, वैसा वर्तन रखने का समजना चाहिये।

५५. पोसह पारतां गाथा.

सागर-चंदो, कामो,
चंदवडिंसो सु-दंसणो, धन्नो।

जेसिं पोसह-पडिमा.
अखंडिआ जीविअंते वि ॥१॥
धन्ना सलाहणिज्जा.
सुलसा आणंद-कामदेवा य ।
जास पसंसइ भयवं.
दढ-व्वयत्तं महा-वीरो ॥२॥

पोसह विधिए लीधो. विधिए पार्यो. विधि करतां जे कोइ अविधि हुओ होय. ते सवि हु मन. वचन. कायाए करी. मिच्छा मि दुक्कडं ॥ पोसहना अढार दोष मांहि जे कोइ दोष लाग्यो होय ते सवि हु मन. वचन. कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

भावार्थ— [illegible] पोसह पारते समय दोनों [illegible] के उच्चारण करने के लिये [illegible] आदि [illegible] की प्रशंसा करते हैं।

५१ [illegible]

[illegible]

पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश,
जिनवर चैत्य नमुं निशदिश ॥१॥
बीजे लाख अट्ठावीश कह्यां,
त्रीजे बार लाख सद्दह्यां।
चोथे स्वर्गे अड लख धार,
पांचमे वंदुं लाख ज चार ॥२॥
छट्ठे स्वर्गे सहस पचास,
सातमे चालीस सहस प्रासाद।
आठमे स्वर्गे छ हजार,
नव-दशमे वंदुं शत चार ॥३॥
अग्यार बारमे त्रणसें सार,
नवग्रैवेयके त्रणसें अढार।
पांच अनुत्तर सर्वे मळी,
लाख चोराशी अधिकां वळी ॥४॥
सहस सत्ताणुं त्रेवीश सार,
जिनवर भवनतणो अधिकार।
लांबां सो जोजन विस्तार,
पचास ऊंचां बहोंतेर धार ॥५॥

ऋषभ, चंद्रानन, वारिषेण,
वर्द्धमान नामे गुणसेण ॥१०॥
समेतशिखर वंदुं जिन वीश,
अष्टापद वंदु चोवीश।
विमलाचल ने गढ गिरनार,
आबु उपर जिनवर जुहार ॥११॥
शंखेश्वर केसरियो सार,
तारंगे श्री अजित जुहार।
अंतरिक्ख वरकाणो पास,
जीराउलो ने थंभणपास ॥१२॥
गाम-नगर-पुर-पाटण जेह
जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह।
विहरमान वंदुं जिन वीश,
सिद्ध अनंत नमुं निशदिश ॥१३॥
अढी द्वीपमां जे अणगार,
अढार सहस शीलांगना धार।
पंच महाव्रत समिति सार,
पाळे पळावे पंचाचार ॥१४॥

बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल,

ते मुनि वंदूं गुणमणिमाल ।

निज निज ऋद्धी वीनति वरं,

"जीव" वदे सुखसागर वरं ॥८५॥

धनुष पांचसे देहडी ए, सोहिए सोवन वान।
'कीर्तिविजय' उवज्झायनो. 'विनय' धरे तुम ध्यान ॥३॥

५६ श्री सीमन्धर जिन स्तवन

पुक्खलवईविजये जयो रे, नयरी पुंडरिगिणी सार।
श्री सीमन्धर साहिबा रे, राय श्रेयांसकुमार
जिणन्दराय! धरजो धर्मसनेह ॥१॥
मोटा नाना आंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत।
शशिदरिसण सायर वधे रे, कैरववन विकसंत. जि० ॥२॥
ठाम कुठाम न लेखवे रे, जग वरसंत जलधार।
कर दोय कुसुमे वासीए रे, छाया सवि आधार. जि० ॥३॥
राय ने रंक सरिखा गणे रे, उद्योते शशि सूर।
गंगाजल ते बिहुंतणा रे, ताप करे सवि दूर. जि० ॥४॥
सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे छो महाराज।
मुझशुं अंतर किम करो रे?, बांह्य ग्रह्यानी लाज. जि० ॥५॥
मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण।
मुजरो माने सवि तणो रे, साहिब तेह सुजाण. जि० ॥६॥
वृषभलंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुक्मिणीकंत।
वाचक 'जस' इम विनवे रे, भयभंजन भगवंत. जि० ॥७॥

५७. श्री सीमन्धर जिन थोय.

सीमन्धर जिनवर! सुखकर साहिब देव!,
अरिहंत सकळनी, भाव धरी करुं सेव!;

धनुप पांचसे देहडी ए, सोहिए सोवन वान।
'कीर्तिविजय' उवज्झायनो. 'विनय' धरे तुम ध्यान ॥३॥

५६ श्री सीमन्धर जिन स्तवन

पुक्खलवईविजये जयो रे, नयरी पुंडरिगिणी सार।
श्री सीमन्धर साहिबा रे, राय श्रेयांसकुमार
जिणन्दराय! धरजो धर्मसनेह ॥१॥
मोटा नाना आंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत।
शशिदरिसण सायर वधे रे, कैरववन विकसंत. जि० ॥२॥
ठाम कुठाम न लेखवे रे, जग वरसंत जलधार।
कर दोय कुसुमे वासीए रे, छाया सवि आधार. जि० ॥३॥
राय ने रंक सरिखा गणे रे, उद्योते शशि सूर।
गंगाजल ते बिहुंतणा रे, ताप करे सवि दूर. जि० ॥४॥
सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे छो महाराज।
मुझशुं अंतर किम करो रे?, बांह्य ग्रह्यानी लाज. जि० ॥५॥
मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण।
मुजरो माने सवि तणो रे, साहिब तेह सुजाण. जि० ॥६॥
वृषभलंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुक्मिणीकंत।
वाचक 'जस' इम विनवे रे, भयभंजन भगवंत. जि० ॥७॥

५७. श्री सीमन्धर जिन थोय.

सीमन्धर जिनवर! सुखकर साहिब देव!,
अरिहंत सकलनी, भाव धरी करुं सेव!;

६२. चैत्यवन्दन करने की विधि

प्रथम तीन 'खमासमण' देने चाहिये। फिर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं?' 'इच्छं' ऐसे कहकर चैत्यवन्दन कहना चाहिये। बाद में 'जंकिंचि' कहना और फिर दो हाथ जोड़कर 'नमुत्थुणं, जावंति चेइआई' कहना तत्पश्चात् 'खमा-समण' देकर 'जावंत केवि साहू,' 'नमोऽर्हत्' कहकर स्तवन कहना चाहिये। उसके बाद दो हाथ जोड़कर ललाट को लगाकर 'जय वीयराय' पूरा कहना चाहिये। 'आभवमखंडा' तक कहकर हाथ को नीचे उतार लेना चाहिये। फिर खड़े होकर 'अरिहंत चेइआणं, अन्नत्थ०' कहकर एक 'नवकार' का काउस्सग्ग करके और 'नमो अरिहंताणं' कहकर पार कर × 'नमोऽर्हत्' कहकर एक थोय कहनी चाहिये।

६३. सामायिक लेने की विधि

प्रथम उच्च आसन पर पुस्तक प्रमुख वस्तु धर, श्रावक-श्राविका कटासणा, मुहपत्ति और चरवला को लेकर, शुद्ध वस्त्र पहन कर, जगह पूंज कर, कटासणे पर बैठ कर, मुहपत्ति बाएं हाथ में मुंह के नजदीक रख कर, दाहिना हाथ स्थापनाजी के सन्मुख रख कर, एक 'नवकार' गिनकर

× स्त्रियाँ 'नमोऽर्हत्' न कहें।

'पंचिंदिअ' कहे । फिर 'खमासमण' देकर 'इरियावहियं' 'तस्स उत्तरी' 'अन्नत्थ ऊससिएणं' कहे । फिर एक 'लोगस्स' अथवा 'चार नवकार' का काउस्सग्ग करके और पार करके प्रगट 'लोगस्स' कहे ।

फिर 'खमासमण' देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । सामायिक मुहपत्ति पडिलेहउं?' इच्छं ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी चाहिए ।

पश्चात् 'खमासमण' देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाहउं? इच्छं कहकर 'खमासमण' देकर इच्छा० × सामायिक ठाउं? ऐसे कहकर दो हाथ जोडकर एक 'नवकार' गिनकर, इच्छकारी भगवन् पसाय करी सामायिक दण्डक उच्चरावोजी' कहना । और फिर वडों से 'करेमि भंते' कहलवाना या स्वयं कहना ।

उसके बाद 'खमासमण' देकर 'इच्छा० वेसणे सदिसाहउं?' इच्छं कहकर और 'खमासमण' देकर 'इच्छा० वेसणे ठाऊं?' 'इच्छं' कहकर 'खमासमण,' देकर 'इच्छा०' सज्झाय संदिसाहुं?' 'इच्छं' कहकर 'खमासमण' देकर 'इच्छा० सज्झाय करुं?' 'इच्छं' कहकर तीन 'नवकार'

× जहां जहां "इच्छा०" लिखा हो, वहां वहां सर्वत्र "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!" समझना ।

और 'पंचिंदिय' न कहना । फिर 'खमासमण' 'इरिया-
वहियं 'तस्स उत्तरी' 'अन्नत्थ' कहकर एक लोगस्स'
अथवा चार 'नवकार' का काउस्सग्ग करके, और पार
करके प्रगट 'लोगस्स' कहना चाहिये । फिर खडे पैर
बैठ कर, मुहपत्ति, चरवला, कटासणा, उत्तरासंग, धोती,
कंदोरा आदिका पडिलेहण करना चाहिये । 'इरियावहिया'
पडिक्कम कर काजा निकालकर कलेवर, सचित्त आदि
देखना। फिर स्थापनाजी सन्मुख खडा रहकर-'इरियावहिया'
पडिक्कम कर काजा परठने की जगह ढूंढकर 'अणुजाणह
जस्सुग्गहो' कहकर, काजे को परठकर तीन वार 'वोसिरइ'
कहना चाहिये ।

६६. देव वांदने की विधि

प्रथम 'इरियावहिया' से लेकर 'लोगस्स' तक कहकर
'उत्तरासंग' डालकर 'चैत्यवं [illegible] चि' 'नमुत्थुणं'
कहकर 'जयवीयराय' आभ [illegible] चाहिये
बाद में दूसरा 'चैत्यवंदन' [illegible] 'नमुत्थुणं'
कहकर 'अरिहंत चेइ॰ [illegible] '।
काउस्सग्ग। 'नमोऽर्हत्' और
सव्वलोए॰ अन्नत्थ॰' तक
दूसरी 'थोय'। 'पुक्ख
'नवकार' का काउस्सग्ग और

गिनने चाहिए। फिर दो घडी तक सज्झाय ध्यान करना चाहिए।

६४. सामायिक पारने की विधि

प्रथम 'खमासमण' देकर 'इरियावहियं' से लेकर 'लोगस्स' तक कहकर खमा०' देकर 'इच्छा० मुहपत्ति पडिलेहउं ?' इच्छं कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी चाहिए। फिर 'खमासमण' देकर 'इच्छा० सामायिक पारुं ?'

गुरु कहे—'पुणोवि कायव्वो' (फिरसे सामायिक करो) पारनेवाला कहे 'यथाशक्ति' फिर 'खमासमण' देकर इच्छा० सामायिक पार्यु ?'

गुरु कहे—'आयारो न मोत्तव्वो' (आचार छोडना नहीं)।

पारनेवाला कहे 'तहत्ति'। फिर दाहिना हाथ चरवला अथवा कटासणे पर रखकर एक 'नवकार' गिनकर 'सामाइअ-वय-जुत्तो' कहना चाहिए। दाहिना हाथ स्थापनाजी के सामने उल्टा रखकर (उथापनमुद्रा करके) एक 'नवकार' गिनना चाहिए।

६५. पडिलेहन करने की विधि।

'नवकार' 'पंचिंदिअ' कहकर स्थापनाचार्य की स्थापना करनी. परंतु स्थापनाचार्यजी हो तो 'नवकार'

वेयावच्च० अन्नत्थ० एक नवकार' का काउस्सग्ग। 'नमोऽर्हत्' और चौथी 'थोय' कहनी चाहिये।

फिर 'नमुत्थुणं' कहकर उसी तरह से ही चार थोये कहनी चाहिये। फिर 'नमुत्थुणं' तथा 'जावंति०' 'जावंत०' और स्तवन कहकर आधा जयवीयराय' अर्थात् 'आभवमखण्डा' तक कहना। फिर चैत्यवंदन करके 'जं किंचि' और 'नमुत्थुणं' कहकर फिर 'जयवीयराय' पूरा कहना चाहिये। उसके बाद 'खमासमण' देकर इच्छकारी भगवन् सज्झाय करुं?' आदेश मांगकर 'नवकार' गिनकर 'मन्नह जिणाणं' की सज्झाय कहनी चाहिये।

मध्याह्न तथा शामको देव वादते समय यह सज्झाय यहां न बोलनी चाहिये। (विधि करतां जे कोई अविधि हुओ होय, उनका मिच्छा मि दुक्कडं' देना।)

६७. देवसिअ प्रतिक्रमणकी विधि

(१) प्रथम सामायिक लेना।

(२) फिर जल पीया हो, तो मुहपत्ति पडिलेहनी चाहिये।

(३) आहार किया हो, तो मुहपत्ति और दो बार 'वांदणा' देना चाहिये। किन्तु दूसरे 'वांदणे में आवस्सिआए' पाठ न कहना। 'इच्छकारी भगवन्! पसाय करी पच्चक्खाण का आदेश देवो जी'।

वेयावच्च० अन्नत्थ० एक नवकार' का काउस्सग्ग। 'नमोऽर्हत्' और चौथी 'थोय' कहनी चाहिये।

फिर 'नमुत्थुणं' कहकर उसी तरह से ही चार थोये कहनी चाहिये। फिर 'नमुत्थुणं' तथा 'जावंति०' 'जावंत०' और स्तवन कहकर आधा जयवीयराय' अर्थात 'आभवमखण्डा' तक कहना। फिर चैत्यवंदन करके 'जं किंचि' और 'नमुत्थुणं' कहकर फिर 'जयवीयराय' पूरा कहना चाहिये। उसके बाद 'खमासमण' देकर इच्छाकारी भगवन् सज्झाय करूं?' आदेश मांगकर 'नवकार' गिनकर 'मन्नह जिणाणं' की सज्झाय कहनी चाहिये।

मध्याह्न तथा शामको देव वांदते समय यह सज्झाय यहां न बोलनी चाहिये। (विधि करते में कोई अविधि हुओ होय, उसका मिच्छा मि दुक्कडं' देना।)

६७. देवसिअ प्रतिक्रमणकी विधि

(१) प्रथम सामायिक लेना।

(२) फिर जल पीया हो, तो मुहपत्ति पडिलेहनी चाहिये।

(३) आहार किया हो, तो मुहपत्ति और दो बार 'वांदणा' देना चाहिये। किन्तु दूसरे वांदणे में 'आवस्सिआए' पद न कहना। 'इच्छाकारी भगवन्! पसाय करी पच्चक्खाण का आदेश देनो जी'।

(४) ऐसा कहकर यथाशक्ति पच्चक्खाण करना चाहिये।

(५) 'खमासमण' देकर 'इच्छाकारेण० चैत्यवंदन करुं ?' 'इच्छं' कहकर वडील या खुद 'चैत्यवन्दन' कहकर 'जंकिंचि' कहना चाहिये।

(६) 'नमुत्थुणं' कहकर और खडे होकर 'अरिहंत चेइआणं', कहना। और एक 'नवकार' का काउस्सग्ग करके और पार करके 'नमोऽर्हत्' कहकर प्रथम थोय कहनी चाहिये। फिर—

(७) 'लोगस्स' कहना चाहिये। 'सव्वलोए अरिहंतचेइआणं' कहकर एक 'नवकार' का काउ० करके और पार करके दूसरी 'थोय' कहनी चाहिये। फिर—

(८) 'पुक्खरवरदी०' कहकर 'सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए०' अन्नत्थ० कहकर एक 'नवकार' का काउस्सग्ग करके, पार करके तीसरी थोय कहनी चाहिये। फिर—

(९) 'सिद्धाणं-बुद्धाणं' कहकर 'वेयावच्चगराणं० करेमि काउस्सग्गं' 'अन्नत्थ०' कहकर एक 'नवकार' का काउस्सग्ग करके, पार करके 'नमोऽर्हत्०' कहकर चोथी थोय कहनी चाहिये। फिर—

(१०) बैठ कर 'नमुत्थुणं' कहना चाहिये। फिर—

(१८) 'सव्वस्सवि 'देवसिअ०' कहकर वीरासन से—

(१९) बैठकर एक 'नवकार' गिनकर, 'करेमि भंते०' इच्छामि पडिक्कमिउं' कहकर—

(२०) 'वंदित्तु' कहकर दो 'वांदणे' देने चाहिये। फिर

(२१) 'अब्भुट्ठिओमि अब्भितर देवसिअं' खमा कर दो 'वांदणे' देने चाहिये। फिर हाथ जोडकर 'आयरिअ उवज्झाए' कहना चाहिये।

(२२) फिर 'करेमि भंते' इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ०' कहकर 'तस्सउत्तरी० अन्नत्थ०' कहकर दो 'लोगस्स' अथवा आठ 'नवकार' का काउस्सग्ग करके, और पार करके लोगस्स कहना चाहिए।

(२२) फिर 'सव्वलोए अरिहंत–चेइआणं०' अन्नत्थ० कहकर एक 'लोगस्स' अथवा चार 'नवकार' का काउस्सग्ग करके और पार करके—

(२४) 'पुक्खरवरदी० सुअस्स भगवओ करेमि० काउ० वंदण० अन्नत्थ०' कहकर एक 'लोगस्स' अथवा चार 'नवकार' का काउ० करके और पार करके—

(२५) 'सिद्धाणं–बुद्धाणं' कहकर 'सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं०' अन्नत्थ० कहकर एक 'नवकार' का

(३१) दांया हाथ उपधि पर स्थाप कर 'अड्ढाइज्जेसु०' वडिलसें कहलवाना या स्वयं कहना चाहिये। फिर–

(३२) 'इच्छाकारेण० देवसिअ–पायच्छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं ?' 'इच्छं देवसिअपायच्छित्त–विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं' 'अन्नत्थ०' कहकर चार 'लोगस्स' अथवा सोलह 'नवकार' का काउस्सग्ग करना चाहिये। उसको पार कर प्रगट लोगस्स कहना चाहिये।

(३३) फिर 'खमासमण' देकर, 'इच्छा० सज्झाय सन्दिसाहउं ?' इच्छं 'खमासमण' 'इच्छाकारेण० सज्झाय करुं ? इच्छं. नवकार गिनकर वडिल या उनकी पास आदेश मांग कर स्वयं सज्झाय कहनी, और फिर एक नवकार गिनना।

(३४) 'इच्छाकारेण० दुक्खक्खय–कम्मक्खय–निमित्तं काउस्सग्ग करुं ?' 'इच्छं' 'दुक्खक्खय–कम्मक्खय–निमित्तं करेमि काउस्सग्गं' अन्नत्थ०' कहकर संपूर्ण चार 'लोगस्स' अथवा सोळ 'नवकार' का काउस्सग्ग करना चाहिये। तत्पश्चात् एक गृहस्थ या खुद ही पार कर फिर 'नमोऽर्हत्' कहकर 'लघुशान्ति' कहनी। फिर एक 'लोगस्स प्रगट कहना चाहिये।

(३५) फिर 'खमा०' देकर इरियावही तस्स उत्तरी०'

'अन्नत्थ' कहकर एक 'लोगस्स' अथवा चार 'नवकार' का 'काउस्सग्ग' करके और पार करके 'लोगस्स' कहना चाहिये ।

(३३) फिर 'चउक्कसाय' 'नमुत्थुणं' जावंति० जावंत 'उवसग्गहरं' 'जय वीयराय' कहकर मुहपत्ति पडि-लेहकर सामायिक पारनेकी विधि अनुसार सामायिक पारना चाहिये । सर्वत्र अंतर विधि गुरु से पास समझना चाहिये ।

इति देवसिय प्रतिक्रमण विधि ॥

---

६८. राइय–प्रतिक्रमण की विधि

(३) 'खमा०' देकर 'जगचिंतामणि' के चैत्यवन्दन से 'जय वीयराय' पूरा कहना चाहिये। फिर—

(४) चार 'खमा०' देकर 'भगवानहं आचार्यहं, उपाध्यायहं, सर्व साधुहं' को वांदणा देना चाहिये। फिर—

(५) दो 'खमा०' देकर सज्झाय का आदेश मांगकर, और एक नवकार गिन कर 'भरहेसर' की सज्झाय कहनी चाहिये, और उसके बाद में एक 'नवकार' गिनना। फिर खडे होकर 'इच्छकार सुहराइ०' का पाठ कहना।

(६) 'इच्छा० राइअपडिक्कमणे ठाउं' 'इच्छं' कहकर दांया हाथ उपधि पर रखकर 'सव्वस्सवि राइअ' कहना।

(७) 'नमुत्थुणं' 'करेमि भंते' कहकर इच्छामि ठामि 'काउस्सग्गं' 'तस्स उत्तरी' 'अन्नत्थ०' कहकर एक 'लोगस्स' अथवा चार 'नवकार' का काउस्सग्ग करना और पार कर—

(८) प्रगट लोगस्स कहकर, 'सव्वलोए अरिहंत० अन्नत्थ' कहकर एक 'लोगस्स' अथवा 'चार नवकार' का 'काउस्सग्ग' करके और पार करके 'पुक्खर-वरदी०' 'सुअस्स' वंदण-वत्ति० अन्नत्थ० कहकर 'अतिचार' की आठ गाथा अथवा आठ 'नवकार'

आवश्यक संभारने चाहिए। उस में पच्चक्खाण किया हो, तो 'किया है जी' और धारा हो तो 'धारा है जी' कहना चाहिये। फिर 'इच्छामो अणुसट्ठिं' नमो खमासमणाणं' 'नमोऽर्हत्०' कहकर—

(१५) पुरुषो 'विशाललोचन' और स्त्रीयां संसारदावाकी तीन गाथा बोले। "नमुत्थुणं" "अरिहंतचेइआणं" अन्नत्थ० कहकर एक 'नवकार' का काउस्सग्ग करके और पार करके 'नमोऽर्हत्०' कहकर कल्लाण-कंदं' की 'प्रथम थोय' कहनी चाहिये। फिर—

(१६) 'लोगस्स' 'पुक्खरवरदी' 'सिद्धाणं बुद्धाणं' विधि अनुसार कहकर अनुक्रम से बची हुई तीनों 'थोय' कहनी चाहिये। फिर—

(१७) 'नमुत्थुणं' कहकर 'भगवान्हं आदि' चारों को चार 'खमा०' से वन्दन करना चाहिये फिर—

(१८) दांया हाथ उपधि पर रखकर 'अड्ढाइज्जेसु' कहना चाहिये।× फिर—

(१९) 'खमा०' देकर श्री सीमंधरस्वामी का चैत्यवन्दन स्तवन, 'जय वीयराय,' 'काउस्सग्ग,' 'थोय' पर्यन्त सब कहना चाहिये। फिर—

× यहा दोनों चैत्यवन्दन के पहिले क्रमसे सीमन्धरस्वामी के और सिद्धाचलजी के दोहे बोले जाते है।
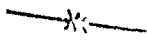
उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाण कर्युं चउविहार, आयंबील, निवी, एकासणुं, विआसणुं-पच्चक्खाण कर्युं तिविहार, पच्चक्खाणं, फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तिरिअं, किट्टिअं,-आराहिअं, जं च न आराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तिविहार उपवास होवे तो पच्चक्खाण पारने का सूत्र-सूरे उग्गए उपवास कर्यो तिविहार, पोरिसी, साड्ढपोरिसी, पुरिमड्ढ मुट्ठिसहियं पच्चक्खाण कर्यु पाणहार पच्चक्खाणं फासिअं० विगेरे ।

पीछे-आसन के उपर बैठ कर एक 'नवकार' गिनना ।

७०. पच्चक्खाणो.

नमुक्कारसहिअंका पच्चक्खाण

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

पोरिसी-साड्ढपोरिसीका

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साड्ढपोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ. उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ।

जो एकासणे का पच्चक्खाण करना हो तो 'बियासणं' की जगह 'एगासणं' बोलना चाहिये ।

आयंबिल का ।

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं साड्ढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ–उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, आयंबिलं पच्चक्खाइ–अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं,' सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एगासणं पच्चक्खाइ–तिविहंपि आहारं–असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा,ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ ।

तिविहार उपवासका ।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ–तिविहंपि आहारं-असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणहार पोरिसि, साड्ढपोरिसि मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ

साइम–अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

दुविहारका–

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ–दुविहंपि आहारं–असणं खाइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ।

७१ तीर्थंकरों के नाम–लाञ्छन–वर्ण ।

क्रम.	नाम.	लाञ्छन.	वर्ण
१	ऋषभदेव	बैल	काञ्चन
२	अजितनाथ	हाथी	,,
३	संभवनाथ	घोडा	,,
४	अभिनन्दनस्वामी	बंदर	,,
५	सुमतिनाथ	क्रौञ्चपक्षी	,,
६	पद्मप्रभ	कमल	लाल
७	सुपार्श्वनाथ	स्वस्तिक	काञ्चन
८	चन्द्रप्रभ	चन्द्र	उज्ज्वल
९	सुविधिनाथ	मगरमच्छ	,,
१०	शीतलनाथ	श्रीवत्स	काञ्चन
११	श्रेयांसनाथ	गेंडा	,,
१२	वासुपूज्य	पाडा	लाल

७३ वीश विहरमान जिनके नाम

क्रम.	नाम.	क्रम.	नाम.	क्रम.	नाम.
१	सीमंधर	८	अनन्तवीर्य	१५	ईश्वर
२	युगमंधर	९	सुरप्रभ	१६	नेमिप्रभ
३	बाहु	१०	विशाल	१७	वीरसेन
४	सुबाहु	११	वज्रधर	१८	महाभद्र
५	सुजात	१२	चंद्रानन	१९	देवयशा
६	स्वयंप्रभ	१३	चन्द्रबाहु	२०	अजितवीर्य
७	ऋषभानन	१४	भुजङ्ग		

७४ प्रभुदर्शन समय बोलनेके दोहे

प्रभु दरिसन सुख संपदा, प्रभु दरिसन नवनिध;
प्रभु दरिसनथी पामीए, सकल पदारथ सिद्ध. १

भावे जिनवर पूजीए, भावे दीजे दानः
भावे भावना भावीए, भावे केवळ–ज्ञान. २

जीवडा! जिनवर पूजीए, पूजानां फल होय;
राजा नमे परजा नमे, आण न लोपे कोय. ३

फूल्डा केरा बागमां, बेठा श्री जिनराय;
जेम तारामां चन्द्रमा, तेम शोभे महाराय. ४

त्रिभुवननायक तुं धणी, महा मोटो महाराज;
मोटे पुण्ये पामीयो, तुम दरिसन हुं आज. ५

तीर्थंकर पद पुण्यथी, तिहुअण जन सेवंत।
त्रिभुवनतिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥६॥
सोळ पहोर प्रभु देशना, कंठे विवर वर्तुल।
मधुर ध्वनि सुर नर सुणे, तेणे गले तिलक अमूळ ॥७॥
हृदयकमल उपशम वले, बाळया राग ने रोष।
हिम दहे वनखंडने, हृदय तिलक संतोष ॥८॥
रत्नत्रयी गुण उजली, सकल सुगुण विशराम।
नाभिकमलनी पूजना, करतां अविचळ धाम ॥९॥
उपदेशक नव तत्त्वना, तेणे नव अंग जिणंद।
पूजो बहुविध रागथी, कहे शुभवीर मुणींद ॥१०॥

७६ चैत्यवन्दनो

श्री विविध तीर्थनुं-

आज देव अरिहंत नमुं, समरुं तारुं नाम;
ज्यां ज्यां प्रतिमा जिन तणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम. १
शेत्रुंजे श्री आदिदेव, नेम नमुं गिरनार;
तारंगे श्री अजितनाथ, आबु ऋषभ जुहार. २
अष्टापदगिरि उपरे, जिन चोवीशे जोय;
मणिमय मूरत मानशुं, भरते भरावी सोय ३

समेतशिखर तीरथ वडुं, ज्यां वीशे जिन-पाय;
वैभारगिरिवर उपरे, (श्री) वीर जिनेश्वरराय. ४
मांडवगढनो राजियो, नामे देव सुपास;
ऋषभ कहे जिन समरतां, पहोंचे मननी आश. ५

७७ स्तवनो

श्री ऋषभदेवस्वामीनुं स्तवन

जगजीवन जगवालहो, मरुदेवीनो नंद लाल रे;
मुख दीठे सुख उपजे, दरिसन अतिहि आनंद लाल रे;
आंखडी अंबुज पांखडी, अष्टमी शशीसम भाल लाल रे;
वदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिहि रसाळ लाल रे. २
लक्षण अंगे विरजतां, अडहिय-सहस उदार लाल रे;
रेखा कर चरणादिके, अभ्यन्तर नहि पार लाल रे. ३
इन्द्र चन्द्र रवि गिरितणा गुण लइ घडियुं अंग लाल रे;
भाग्य किहांथकी आवियुं ?, अचरिज एह उत्तंग लाल रे. ४
गुण सघळा अंगीकर्या, दूर कर्या सवि दोष लाल रे;
वाचक यशविजये थुण्यो, देजो सुखनो पोष लाळ रे. ५

श्री महावीरस्वामीनुं स्तवन

गिरुआ रे गुण तुम तणा, श्री वर्द्धमान जिनराया रे।
सुणतां श्रवणे अमी झरे, मारी निर्मळ थाये काया रे ॥१॥
तुम गुणगण गंगाजळे, हुं झीली निर्मळ थाउं रे।
अवर न धंधो आदरुं, निशदिन तोरा गुण गाउं रे ॥२॥
झील्या जे गंगाजळे, ते छिल्लर जळ नवि पेसे रे।
जे माळती-फूले मोहिया, ते बाउळ जइ नवि बेसे रे ॥३॥

करुणाधिक कीधी रे सेवक उपरे,
भव-भय-भावठ भांगी भक्ति-प्रसंग जो;
मनोवांछित फळियां रे प्रभु आलंबने,
कर जोडीने मोहन कहे मनरंग जो.-प्रीत० ५

श्री सिद्धाचलजीनां स्तवनो.

एक दिन पुंडरीक गणधरु रे लाल,
पूछे श्री आदि जिणंद सुखकारी रे;
कइये ते भवजल उतरी रे लाल.
पामीश परमानन्द भववारी रे. एक० १

कहे जिन इण गिरि पामशो रे लाल;
नाण अने निरवाण जयकारी रे;
तीरथ महिमा वाधशे रे लाल,
अधिक अधिक मंडाण निरधारी रे. एक० २

इम निसुणी इहां आवीया रे लाल,
घाती करम कर्या दुर तम वारी रे;
पंच कोडी मुनि परिवर्या रे लाल,
हुआ सिद्धि हजूर भववारी रे. एक० ३

चैत्रीपूनम दिन कीजिए रे लाल,
पूजा विविध प्रकार दिलधारी रे;

पछे प्रदक्षिणा आउग्मणा रे लाल.

कीजीए थुई नमुक्कार नम्नारी रे. एक० ४

दस वीस त्रीस चालीस भला रे लाल,

पचास पुष्पनी माल अति सारी रे.

नरभव लाहो लीजीए रे लाल,

जेम होय ज्ञान विशाल मनोहारी रे. एक० ५

जिन उत्तम पूंठ हवे पूरो,
कहे पद्मविजय थाउं शूरो:
तो वाधे मुज मन अति नूरो. गुणा० ८

(२)

प्रह ऊठी वंदु, ऋषभदेव गुणवंत,
प्रभु बेठा सोहें, समवसरण भगवंतः
त्रण छत्र बिराजे, चामर ढाळे इन्द्र,
जिनना गुण गावे, सुर नर नारीवृंद ॥१॥

श्री नेमिनाथस्वामि की स्तुति

राजुल वर नारी, रूपथी रति हारी,
तेहना परिहारी बाळथी ब्रह्मचारी।
पशुआं उगारी, हुवा चारित्रधारी,
केवळसिरी सारी, पामिया घाती वारी ॥१॥

श्री पार्श्वनाथस्वामि की स्तुति

पास जिणिंदा, वामानंदा, जब गरभे फणी,
सुपनां देखे, अर्थ विशेषे कहे मघवा मळी।
जिनवर जाया, सुर हुलराया, हुवा रमणी प्रिये,
नेमि-राजि, चित्त विराजि, विलोकित व्रत लीये ॥१॥

क्रोध की सज्झाय

कडवां फळ छे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले।
रीस तणो रस जाणिये, हलाहल-तोले ॥ कडवां० १
क्रोधे क्रोड पूरवतणुं, संजमफळ जाय।
क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखे न थाय ॥ कडवां० २

माया की सज्झाय

समकितनुं मूळ जाणीये जी, सत्य वचन साक्षात् ।
साचामां समकित वसे जी, मायामां मिथ्यात्व रे ॥
प्राणी ! म करीश माया लगार ॥ १
मुख मीठो जूठो मने जी, कूड कपटनो रे कोट ।
जीभे तो "जी जी" करे जी, चित्तमांहे ताके चोट रे ॥
प्रा० म० २
आप गरजे आघो पडे जी, पण न धरे विश्वास ।
मनशुं राखे आंतरो जी, ए मायानो पास रे ॥ प्रा० म० ३
जेहशुं बांधे प्रीतडी जी, तेहशुं रहे प्रतिकूळ ।
मेल न छंडे मनतणोजी, ए मायानुं मूल रे ॥ प्रा० म० ४
तप कीधो माया करी जी, मित्रशु राख्यो रे भेद ।
मल्लि जिनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्री वेद रे ॥ प्रा०म० ५
उदयरतन कहे सांभळो जी, मेलो मायानी बुद्ध ।
मुक्तिपुरी जावातणो जी, ए मारग छे शुद्ध रे ॥ प्रा०म० ६

लोभकी सज्झाय

तुमे लक्षण जोजो लोभनां रे, लोभे मुनिजन पामे क्षोभना रे,
लोभे डाह्या मन डोलया करे रे लोभे दुर्घट पंथे संचरे रे तुमे० १
तजे लोभ तेहना लउं भामणां रे, वळी पाये नमीने करुं खामणां रे,
लोभे मरजादा न रहे केहनी रे तुमे संगत मेलो तेहनी रे २
लोभे घर मेली रणमां मरे रे, लोभे उच्च ते नीचुं आचरे रे,
लोभे पाप भणी पगलां भरे रे, लोभे अकारज करतां न ओसरे रे ३

बे प्रति—मूण हिंदी नुं शुद्धिपत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	३	गंभारा	गंभीरा
१६	४	मणुआ	मणुओ
१७	४	जयवीराय	जयवीयराय
२४	५	वयावच्चगराणं	वेयावच्चगराणं
३८	१०	पढम	पढमे
४१	२	—दास—	—दोस—
४७	१३	नमोऽर्हत०	नमोऽर्हत्०
६८	१९	प्रथभ	प्रथम
७९	४	(३३)	(३६)
८७	७	साइम	साइमं
९४	७	विरजतां	विराजतां